वह परमेश्वर जिसने हमे बनाया है

क्या मैं दोबारा आपका ध्यान खींच सकता हूँ?
मेरी आशा है कि यह सब आपके लिए काफी मददगार होगा।

आशा करता हूँ आपने
अपने कुछ प्रश्न लिख लिए होंगे,

और आशा है आनेवाले कुछ सप्ताहों में आप
उन प्रश्ननों के उत्तरों को

पाना शुरू करेगें।

मैंने सोचा हम ऐसा करेंगे कि इस सप्ताह एक बड़े
विषय पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

हर सप्ताह हम कोशिश करके एक बड़े विषय को चुनते हैं,
और इस सप्ताह जिसे हमने चुना है वह है

'वह परमेश्वर जिसने हमें बनाया है'। मैंने सोचा की आज
रात की शुरूवात मैं आपको एक कहानी बताने से करूँगा

जो आपको यह समझने के लिए मददगार होगी की क्यों
बहुत सारे लोग गड़बड़ाए हुए है

उस परमेश्वर के बारे में,
जो अस्तित्व में हो सकता है या नहीं भी।

इसके लिए आपको अपनी कल्पना का प्रयोग करना होगा,
तो क्या आप इस के लिए तैयार है? कल्पना तैयार है?

मैं चाहता हूँ की आप अभी यह कल्पना करें,
आज रात के बाद, हम सब का अपहरण हो जाता है।

अच्छा विचार है? आप खुश है की आप यहाँ आएँ?
यह और भी बेहतर हो रहा है।

तो हम सब का अपहरण हो गया है, और हम सब को
इकट्टा करके एक बड़ी गाड़ी में डाल दिया गया है।

और जब हम इस बड़ी गाड़ी में है, हमे इंजेक्शन लगाया गया

कीसी ऐसी वस्तु से जीस से हम अपनी याददाश्त खो देते हैं।
अच्छी कहानी है, है ना?

और हम एक ऐसे कमरे मे जागते है जिसमे कोई खिडकियाँ
नहीं है, और कोई दरवाज़े भी नहीं हैं

© Lee McMunn, 2011

अब, एक लम्बे समय तक, कोई किसी से कुछ नहीं कहता।
हम केवल आस-पास देख रहे हैं,

हम सोचते हैं, 'पता नहीं बाहर क्या होगा,

पर हम सब सभ्य हैं,
इसलिए हमें अजनबियों से बात करना अच्छा नहीं लगता।

फीर, एक साहसी व्यक्ति है जो पहले
बात करने की शुरुआत करता है,

और वह है....
देखें क्या मैं यहाँ से कोई स्वंयसेवक चुन सकता हूं....हैदर।

हैदर हममें साहसी जन है। अब, हैदर सोच रही है -

वह कुछ बुद्धिजीवि है, और अपने दिमाग का इस्तेमाल
करती है-और हैदर अपने आप में सोचती है,

'मैं आप को कुछ बताऊँ। इन चार दिवारों के बाहर विशाल
गुलाबी हाथी हैं।'

लीः सच?
हैदरः हाँ

लीः हाँ बिलकुल। इसे विश्वास के साथ कहो।
हैदरः हाँ

लीः बिलकुल- बडे गुलाबी हाथी।

कौन हैदर के साथ सहमत है? कोई उसका अनुयाई?
कोई और सोचता है की बाहर बड़े गुलाबी हाथी है?

एक। दो! अब तक दो लोग आपके अनुयाई बन चुके हैं।
ठीक है, आओ देखें।

अच्छा, इस समय कोई और बोलने का निर्णय लेता है।
और वह है ऐंडी।

अब, ऐंडी यह सुन रहा है, और

ऐंडी बुद्धिजीवि प्रकार कि बातों की ओर बिलकुल नहीं है,

ऐंडी एक भावुक सा जीव है।
ऐंडी एक ऐसा व्यक्ति है...

© Lee McMunn, 2011

जो अपनी भावनाओं से जुड़ा है।
और ऐंडी स्थिति को महसूस कर रहा है,

और वह सोचता है, 'नहीं, यह बड़े गुलाबी हाथी नहीं है।
मैं आपको बताता हूँ

की इन चार दिवारों के बाहर जो है
वह है छोटे हरे बंदर।' सच?

ऐंडीः आवश्य, मैं बंदरों के होने से सहमत हूँ
लीः हाँ बस, बंदर ही हैं।

भरोसा करो, ऐंडी। छोटे हरे बंदर?
ऐंडीः अवश्य

लीःआवश्य। ऐंडी के साथ कौन सहमत है?
ओह, आपको कुछ ज्यादा साथी मिले हैं। ज्यादा।

ठीक, इस समय, कोई और भी सुन रहा है,
और वह सोचता है,

'नहीं, यह इस तरह बिलकुल नहीं है।' यह गैरी है।
और गैरी हैदर को सुन रहा है,

वह ऐंडी को भी सुन रहा था,
और वह कहता है। 'बकवास,

मुझे सच बताने दें।
इन चार दिवारों के बाहर कुछ भी नहीं है।

समस्या यह है, कि आप इसपर विश्वास नहीं कर सकते,
तो आपने अपने जीवन में कुछ मनगड़ंत बना लिया

जीवन को आसान बनाने के लिए।' गैरी?
गैरीः हाँ, कुछ नहीं।

लीः बिलकुल कुछ भी नहीं।
गैरी के साथ कौन है? एक।

लोग इसे सच नहीं मानना चाहते की,
फिर भी गैरी के दो अनुयाई है।

अब, इस समय, अगर हम आप से पूछते, 'कौन सही है?'
सच मे तो, हम नहीं जान सकते।

© Lee McMunn, 2011

क्योंकि इस वक्त हम यह नहीं जान सकते।
हम सभी एक ही कमरे में हैं।

हम बाहर के जगत से कटे हुए हैं।हो सकता है इनमें
से कोई एक सही हो, या कोई भी सही ना हो,

परंतु हमें नहीं पता। तो इस समय
वे जो विश्वास करना

चाहतें हैं उन्हें करने दें और हम
अपना जीवन मे आगे बढ़ें।

पर ज़रा कल्पना करें, जैसे हम बातें कर रहे हैं,
वह व्यक्ति जिन के पास अन्य अनुयाई है,

हम महसूस करते हैं की छत से कोई आवाज आ रही है और हम
ऊपर देखते हैं और छत का कुछ भाग नीचे आ गिरता है

और एक सीढ़ी ऊपर से नीचे आती है और कोई उस सीढ़ी
से नीचे उतरता है।

और वे बाहर के होने का दावा करते हैं, और वे दावा
करते हैं कि आकर हमें बताएंगे कि वहाँ क्या है।

अच्छा, तो इस से कुछ बदलाव आया?
बिलकुल आया। है कि नहीं? बिलकुल आया।

क्योंकि अगर कोई बाहर से सीढ़ी से
नीचे आया है,

तो वे अब ज्ञान से भरे एक मुद्दे पर
बात कर सकते हैं।

यह कठिन नहीं है, है ना? यह परमेश्वर से किस तरह संबंधित
है यह समझना के लिए किसी बुद्धिमान की ज़रूरत नहीं है।

हमारी संस्कृति मे कई लोग यह नहीं सोचते की हम
निश्चित रूप से परमेश्वर के बारें में कुछ भी जान सकतें हैं।

क्योंकि हम विश्वास करते हैं की
यह सिर्फ अंदाज़ा लगाने के खेल है।

यह सब कल्पना के दायरे मे है।
कुछ व्यक्ति बुद्धिमान होते है,

© Lee McMunn, 2011

कुछ अधिक भावुक होते हैं, परंतु हम नहीं जान सकते क्योंकि
यह तो एक बिना किसी खिड़की या दरवाज़े के बंद कमरे में

फंस जाने जैसा है।

परंतु क्या होगा... क्या होगा अगर वह परमेश्वर जिसने
हमें निर्माण किया हमारी दुनिया से सम्पर्क करे तो?

परंतु यही हम चाहते है, है कि नहीं?
हमें यह कल्पना करने की ज़रूरत नहीं की वहाँ क्या हैः

हमारी ज़रूरत यह है की परमेश्वर जिसने हमें बनाया है
हमारी दुनिया के साथ सम्पर्क करें।

क्योंकि अगर ऐसा होता है, तो
चीज़े पूरी तरह परिवर्तित हो जाएँगी।

हम कल्पना से प्रकटीकरण
कि ओर बढ़ जाएँगे।

अब महान समाचार यह है की,
इस पुस्तक के पहले पन्ने पर ही,

यूहन्ना के सुसमाचार के पहिले ही
पन्ने पर यह दावा है।

दो हजार साल पहले जो हुआ।
कि हमारे परमेश्वर ने हमारे ग्रह से सम्पर्क साधा।

तो मै आपको यह दिखाना चाहता हूँ।
अगर आप अपने सुसमाचार की पुस्तकों को पकड़ेंगे,

और अगर आप मेरे साथ पहिले पन्ने की ओर मुड़ना चाहेंगे..
अगर आपको कोई उद्धरण मिले

तो वह यह है। यह इस पाठ्यक्रम का सबसे
आसान उद्धरण है खोजने के लिए।

पन्ना नं.1, आयत 1, और मुझे आयत 1 और 2 आप के
लिए पढ़ने दें। इस की शुरुआत कुछ ऐसी हैः

"आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था
और वह वचन परमेश्वर था।

वह शुरुआत में परमेश्वर के साथ था।"

© Lee McMunn, 2011

अब, इस वक्त आप सोचेंगे,
'एक मिनिट रुकिए!'

ऐसे लगता है की इस पुस्तक के लेखक ने पहिले
ही वचन में स्पष्ट गलती की है।

बिलकुल पहले हि वाक्य मे।
मुझे यह पता नहीं अगर आपने इसे देखा,

क्योंकि वह सीथी रीती से बताना चाहता है
की शुरुवात में

जिस व्यक्ति का नाम वचन है वह परमेश्वर के साथ था
और वह उसी के साथ वह परमेश्वर भी था।

और आप सोचते हैं 'एक मिनिट रुकें। यह ठीक नहीं है।
सच में यहाँ तो टकराव हैं।'

मैं बड़े आनंद के साथ यह कहना चाहुंगा,
और अगले कुछ समय में मैं आपको यह दिखाने भी जा रहा हूँ

की यह एक दूसरे के विरुद्ध नहीं।
सच में, वह क्या कर रहा है...

वह एक परम कथन का बयान कर रहा है,
इस व्यक्ति की पहचान के विषय में

जिसे वचन कहा जाता है।

पर यह देखने के लिए,
हमें यह समझने की ज़रूरत है की एक ही शब्द

के अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं। अब,
हमें यह पता है सामान्य अंग्रेजी या हिन्दी शब्दों के द्वारा।

मै आपको कुछ उदाहरण देता हूँ।
एक अंग्रेज़ी का शब्द 'ring' (रिंग) लें। इसका अर्थ क्या है?

कोई सुझाव?
'रिंग' शब्द का अर्थ क्या है?

प्रेषकः वह जो आपकी ऊँगली में होती है।
लीः वह जो... मुझे यह करना बहुत पसंद है।

यह आपको लोगों की विचार धारा में लेकर जाता है,
की वह क्या कहेंगे।

© Lee McMunn, 2011

तो 'रिंग' इसका का मतलब हो सकता है
वह जो आपकी ऊँगली में होती है (अंगूठी)।

प्रेषकः मुख्य द्वार की घंटी (बजना)।
लीः दरवाजे की घंटी, तो यह भी हो सकता है।

प्रेषकः एक गोलाकार
लीः गोलाकारः तो यह भी हो सकता है।

प्रेषकः जहाँ आपं बॉक्सिंग करते हैं।
लीः ओह, एक बॉक्सिंग रिंग

यह बॉक्सिंग रिंग हो सकता है।
यह बढ़िया है, है ना?

मुझे यह अच्छा लगता है-यह आपको लोगों के
दिमाग में लेकरजाता है-लोग क्या सोचते हैं?

मै आपको एक और उदाहरण देता हूँ।
एक और अंग्रेज़ी का शब्द 'match' (माचिस) लें।

इसका मतलब क्या है?
आपके मन में क्या जाता है जब आप मैच शब्द सुनते है?

प्रेषकः फुटबॉल
लीः फुटबॉल...ओके।

प्रेषकः ज्वाला
लीः जलती हुई ज्वाला, कुछ और?

प्रेषकः जोड़ियाँ
लीः जोड़ियाँ। हाँ...मैच।

वही शब्द, वही अक्षर, परंतु मतलब बिलकुल
भिन्न चीज़ें हो सकती हैं।

एक आखिरी उदाहरण। एक और अंग्रेज़ी का शब्द शब्द 'bow' लें।
आपका 'बाव' के बारे में क्या विचार हैं।

इसका अर्थ क्या हो सकता है।
प्रेषकः बोट

लीः बोट..यह बोट का एक भाग हो सकता है।
हाँ, और क्या?

प्रेषकः झुकना

© Lee McMunn, 2011

लीः झुकना, उदाहरण केलिए आज रात में आपसे कहूँ,
'मेरे सामने झुक जाओ!'

आप क्या करेंगे? आप, आप कहेंगे,
'बिलकुल भी नहीं।'

मुझे लगता है मेरे कहने का मतलब आप समझ गए हैं,
है ना? वही शब्द, और वही अक्षर

पर अर्थ भिन्न हो सकते है, यह उस शब्द के उपयोग पर
निर्भर करता है। 'परमेश्वर' इस शब्द के साथ भी ऐसा ही है।

'परमेश्वर' इस शब्ध का अर्थ थोड़ा बदल सकता हैं और यह
इसपर निर्भर है उसे कि उसे कहाँ उपयोग किया गया है।

और यूहन्ना के सुसमाचार के पहले दो वाक्यों को
समझने का यही रहस्य है।

तो जब वह कहता है की वचन परमेश्वर के साथ था,
तो उसका यह मतलब है की

वह व्यक्ति जिसका नाम वचन है वह एक अन्य
व्यक्ति के साथ था जिसका नाम परमेश्वर पिता है।

परंतु जब वह कहता है की 'वचन परमेश्वर था',
उसका मतलब यह है की वचन पूर्णतः

और सम्पूर्णतया दैवी है। वह 'परमेश्वर' शब्द
को थोड़ा भिन्न तरीके से इस्तेमाल करता है।

परमेश्वर पिता की ओर संकेत करते हुए नहीं,
परंतु दैव्यता की ओरः

की वह पूर्णतः और बिलकुल दैवी है,
जितना की परमेश्वर पिता दैवी है।

अब, आपको यह समझने मे मदद करने के लिए,
ज़रा कल्पना करें की यहाँ एक रेखा है।

ठीक है? यह रही रेखा। और
अगर आप रेखा के इस तरफ है

तो आप पहिले से अस्तित्व में हैं। समझ आया?
तो आप पहिले से अस्तित्व में हैं। आप अनंत है।

© Lee McMunn, 2011

परंतु यदि आप रेखा के इस तरफ हैं,
तो आप अनंत नहीं है।

आप बनाए गए गए हैं। जिसका मतलब यह है कि,
एक समय था जब आप अस्तित्व मे आए।

आप समझ गए? रेखा के इस तरफ आप अनंत है,
आप हमेशा से अस्तित्व मे थे,

रेखा के इस तरफ,
आप निर्मित हुए थे।

अब यूहन्ना अपने सुसमाचार के पहले दो
वाक्यों में जो कह रहा है वह यह है

की रेखा के इस तरफ,
रेखा के अनंत ओर,

दो व्यक्ति हैः परमेश्वर पिता और एक अन्य व्यक्ति
जो वचन कहलाता है।

अब, जब आप यूहन्ना के सुसमाचार को आगे पढ़ते हैं,
तो आप पाते है।

की दरअसल इस रेखा के इस पार एक और व्यक्ति है,
जिसका नाम है पवित्र आत्मा।

अब, मैं जानता हूँ की इस में की
बहुत सारी बातें आप के लिए नई है,

परंतु यूहन्ना के सुसमाचार की बड़ी बात यह है की वह हममें वह
करता है कि जैसे ही हमारा सामना यीशु के शब्दों से होता हैः

हमें दोबारा सोचने को उत्साहित करता है
की परमेश्वर कौन है।

हमें फिर से सोचने को उत्साहित किया जाता है की हमारा
निर्माणकर्ता कौन है।

और यीशु हमसे चाहता है की हम
हमारे निर्माणकर्ता के बारे

में एक दैवी परिवार के रूप में सोचें ना की कोई अकेला
जन जो आकाश में है

© Lee McMunn, 2011

या कोई गैर व्यक्तिगत शक्ति
जैसे की स्टार वौर्स।

तो इस दैवी परिवार के तीन सदस्य हैं।
और, यह एक सिद्ध परिवार है।

यह उन बहुत सारे मनुष्य के परिवारों जैसा नहीं है,
जो आपस मे लड़ते हैं

और अपनी-अपनी अलग अलग
दिशाओं में चले जाते हैं।

यह एक सिद्ध परिवार है। तीन
दैवी सदस्य, तीन अनंत सदस्य

जो एक-दूसरे से सिद्ध प्रेम करते है,
जो भिन्न है पर अलग अलग नहीं।

तो हम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बारे में बात
कर सकते हैं - भिन्न,

परंतु वे आपसी प्रेम में इतने एक हैं की एकसाथ मिलकर वे
एक परमेश्वर कहलाते हैं।

अब, इसे मसीही लोग त्रिएकता कहते है।
और आपको समझने मे मदद करने के लिए,

आपकी पुस्तिकाओं में - कुछ पन्ने पलटने पर -
आप एक सहायक चित्र को देखेंगे

जिसके बारे में मैं बता रहा हूँ।
उस चित्र में आप देखेंगे की वहाँ एक मुकुट है।

तीन मुकुट नहीं। एक मुकुट है।
वह हमारे निर्माणकर्ता को दर्शाता है।

परंतु उस मुकुट के भीतर आपको तीन सदस्य नज़र आएँगेः
पिता,

वचन - या उसका दूसरा नाम भी है, पुत्र-
और पवित्र आत्मा।

इस दैवी परिवार के तीन सदस्य।

अब हम इनमें से कुछ
बातों पर दोबारा आएँगे

© Lee McMunn, 2011

परंतु कुछ देर उसे एक ओर रख दें,
और मैं वचन के बारे में आपको थोड़ा और सिखाना चाहूँगा।

आयत 1 और 2, हमें सिखाते है
की वचन इस दैवी परिवार का सदस्य था।

वचन के बारे में मुझे कुछ और चीज़ें आपको दिखाने दें।
अगर आप अपने सुसमाचारों को उठाएँगे,

आयत 3-5 तक देखें।
वचन के बारे में हमें यह बताया जाता हैः

"सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न
हुआ है उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई।

उस में जीवन था, और वह जीवन
मनुष्यों की ज्योति था।

ज्योति अंधकार में चमकती है,
और अंधकार ने उसे ग्रहण न किया।"

तो हमें यहाँ यह बताया गया है की वचन,
जो इस दैवी परिवार का अनंत सदस्य है,

इन सदस्यों में का एक, वह
सारी वसतुओं के निर्माण में शामिल था।

हम यहाँ अकस्मात हि नहीं आ गए, परंतु
हमें निर्मित्त किया गया है।

और हमें बना के अकेला नहीं छोड़ दिया गया,
हमें यहाँ बताया गया है।

कि ज्योति लगातार अंधकार में
चमकती रहती है।

और यह हमें समझाने का तरीका है की जिस वचन ने सारी
चीज़ों का निर्माण किया।

वह उन्हें थामे और संभाले भी रहता है।

तो ऐसा नहीं है की वचन ने विश्व को
बनाया और फिर सोचा की,

'अब मैं क्या करूँ? अपने पैरों को उपर उठाके लेट जाऊँ,
कुछ टेलिविज़न देखूं...'

© Lee McMunn, 2011

ऐसा बिलकुल नहीं है। हमें बताया गया है की वह लगातार
हर चीज़ों को बनाएँ रखता है।

अब यह दिमाग को हिला देने वाली बात है,
है ना? वचन की पहचान,

उसने शुरुआत में जो किया,
और वह अब भी लगातार जो करता जा रहा है...

अच्छा, एक आखरी बड़ा प्रश्न, जो आयत 6-14
का केंद्रबिंदु है।

और प्रश्न ऐसा है, कि दो हजार साल पहले
वचन क्या किया करता था?

अच्छा, आओ खोजें। आयत 6,
आइए इस पर एक नज़र डालें। हमें बताया गया है किः

"एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ जिसका
नाम युहन्ना था।"

अब, यह व्यक्ति युहन्ना बपतिस्मा दाता
कहलाता है। इस पुस्तक का लेखक नहीं,

परंतु दूसरा व्यक्ति जिसे युहन्ना बपतिस्मा दाता
कहा जाता है। और आयत 7 में हमें बताया जाता है कीः

"वह गवाही देने आया था उस
ज्योति के विषय में,

ताकि उसके द्वारा सब मनुष्य विश्वास करें।
वह स्वयः तो वह ज्योति न था,

वह तो मात्र उस ज्योति की गवाही देने के लिए आया था।

सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है,
जगत में आनेवाली थी।"

अब, यह कैसा दावा है? आपको शुरुवात की कहानी याद है?
हमें क्या चहिए था?

हम चाहते थे की परमेश्वर हमारे जगत के साथ सम्पर्क करें।
अच्छा, हमें बताया गया है की सच्ची ज्योति,

जिसने सारी चीज़ों को बनाया और सारी चीज़ों को
बनाएँ रखता है, जगत में आनेवाला है।

© Lee McMunn, 2011

तो आपका दूसरा बड़ा प्रश्न है की,
'अच्छा, तो उसके जगत में आने के बाद क्या हुआ?

ठीक है, आयत 10 से 13 को देखें।
जब वह वचन जगत में आया

तो कुछ ऐसा हुआः
"वह जगत में था,

और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ था,
और जगत ने उसे नहीं पहिचाना।

वह अपने घर आया और उसके अपनों ने
उसे ग्रहण नहीं किया।

परंतु जितनों ने उसे ग्रहण किया,
उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया

अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर
विश्वास रखते है

वे न तो लहूँ से, न शरीर की इच्छा से,
न मनुष्य की इच्छा से,

परंतु परमेश्वर से उत्पन्न हुए है।"
तो यहाँ कुछ अलग है, है ना?

कुछ लोग उसे स्वीकार करते हैं,
कुछ लोग उसे ठुकराते हैं,

और अगर आप सोच रहे हैं, 'रुकिए,
मैं इन बातों को एक साथ पकड़ने कि कोशिश कर रहा हूँ'

आप इसका सारांश कैसे निकालेंगे? आयत 14 को देखें।
यह बहुत ही उत्तम, उत्तम साराँश है

उस सबका जो मैं आपसे कहने का प्रयत्न कर रहा हूँ।
दो हजार साल से पहले क्या हुआ?

"वचन देहधारी हुआ और
हमारे बीच में डेरा किया।"

तो अगर आप आपके चित्रों को देखेंगे, क्या आप वचन
से लेकर मनुष्य के इतिहास तक की रेखा को देखते हैं?

© Lee McMunn, 2011

हमें बतया गया है कि
सिर्फ दो हज़ार साल से कुछ पहले,

तीन दैवी जनों में से एक, इस अनंत परिवार
का एक दैवी सदस्य,

आया और डेरा किया कहीं दूर नभोमंडल
में नहीं, परंतु बिलकुल यहाँ। इस ग्रह पर।

तो अगर हम सही जगह में और
सही समय पर जीवित होते,

तो हम यीशु से मिल सकते थे।
वह वास्तव मे यहाँ जीवित था

और हमें बताया जाता है की
यीशु की पहचान यह है

की यह वही अनंत वचन है, जो
हमारे संसार में आया।

अब, समझ मे आता है की कि यूहन्ना के पहले अध्याय में
उसे वचन क्यों कहा गया है।

आप इस के बारे में सोंचे - उसे 'वचन' क्यों पुकारें?
यह एक अजीब नाम है।

मुझे लगता है की यहाँ,
हम में से किसी का भी नाम 'वचन' नहीं है।

अगर आप के बच्चे हों तो, मैं नहीं सोचता की
आपकी नाम कि सूची में यह सब से ऊपर होगा, है ना,

लड़के या लड़की के लिए।
'जरा सोचिएः ''वचन'' हाँ, यहीं तो है।'

ऊसका नाम वचन क्यों है?
अच्छा, यह सब वार्तालाप के लिए हैं।

जरा सोचिए जब हम लोगों से बातें करते हैं,
जब आप लोगों से वार्तालाप करना चाहते हैं।

हां, मैं सिर्फ अपने हाथ हवा में हिला सकता हूं,

लेकिन आपसे वार्तालाप करने का सबसे असरदार
तरीका है शब्द या वचन का उपयोग करना।

© Lee McMunn, 2011

उसे वचन कहा जाता है क्योंकि वह दैवी परिवार की
ओर से बोलने वाला दैवी जन है।

तो जैसे ही हम यीशु को सुनते और उसकी ओर देखते हैं,

हम हमारे निर्माणकर्ता की पहचान के बारे में
अधिक सच को खोज सकेंगे।

अब, इस सब का मतलब क्या है?
अच्छा, तो इन सब का कुछ अदभुत,

बड़ा, और आश्चर्यजनक प्रयोग भी है।
अगर यह सच है तो

तो इसका मतलब यह है की अंदाज़ा
लगाने वाले खेल खत्म हुए।

इसका मतलब है की परमेश्वर ने हम से संपर्क किया है,
और इसलिए जैसे ही हम आते

और यीशु को देखते और सुनते हैं,
तो हम निश्चयपूर्वक अधिक जान सकते है

अपने निर्माणकर्ता की पहचान के बारे में,
और मैं सोचता हूँ की यह सचमुच अद्भुत है।

परमेश्वर को जानना संभव है। सिर्फ अंदाज़ा लगाना नहीं,
परंतु परमेश्वर को जानना।

और इसे करने का तरीका है इस पुस्तक को
पकड़ना और इसे विस्तार से पढ़ना

और यीशु को सुनना।
क्योंकि जैसे ही हम यीशु को सुनते है,

तो हम सिर्फ किसी दूसरे व्यक्ति
के सुझाव को नही सुनते।

उस सत्य को सुनते है।

कि परमेश्वर स्वयं हमसे बातें कर रहा है।
तो अंदाज़ा लगाने वाले खेल खत्म।

अब, अगले कुछ सप्ताहों में हम जानेंगे की यीशु सिर्फ एक
वार्तालाप करने वाले जैसा नहीं आया।

© Lee McMunn, 2011

वह हमें छुड़ाने आया। दरअसल वह
हमें छुड़ाने आया उस बेहद कठीन बड़ी समस्या से,

जिसका हम सामना करते हैं।
परंतु उसके बारे में और अधिक अगले कुछ सप्ताहों में,

परंतु आज रात कोशिश करके इसे पकड़े रहेः

की हमारा निर्माणकर्ता इस दुनिया में आया और हमें सत्य
प्रकट किया है।

इसका और क्या मतलब है? अदभुतपूर्ण रूप से,
इसका मतलब है की हमारा यहाँ होना इत्तफाक नहीं है।

क्या यह अच्छा नहीं है?
जब आप आज रात, या कल सुबह अपने घर जाओगे,

और अपने आपको आइने में देखोगे,
मुझे पता नहीं की आपको क्या प्रतिउत्तर मिलेगा।

परंतु जब आप अपने ऊपर मुस्कुराएंगे,

आपको यह सार नहीं निकालना होगा कि
आप यहाँ एक इत्तफाक से हैं।

हम एक प्रेम से भरे परमेश्वर के द्वारा बनाए गए हैं।
एक परमेश्वर जो जीवन को संभाले रखता है,

और एक परमेश्वर जो हमारा मालिक है।
यही तो है, है कि नहीं?

निर्माणकर्ता का महान समाचार है कि हम
यहाँ इत्तफाक से नहीं है, परंतु इसका मतलब यह भी है

कि हम उसके हैं। अब,
कई बार लोग कहते है की जीवन एक उपहार है।

यह आधा सच है, परंतु बाइबल हम से कहती है
की जीवन एक कर्ज हैं।

क्योंकि परमेश्वर ने अनुग्रहपूर्ण रीति से
हमें यह जीवन दिया है,

परंतु ऐसा जीवन नहीं।
जो हम जीएँ और जैसा हम चाहते है वैसा व्यतीत करें।

© Lee McMunn, 2011

एक दिन ऐसा होगा की जब परमेश्वर
हमें उसके सामने बुलाएगा,

और हमें इस जीवन का हिसाब देना होगा जो उसने हमें दिया है ।

हम परमेश्वर की दुनिया में कैसे जीएं है?
जीवन परमेश्वर से मिला एक कर्ज है, और एक दिन

हम उसके सामने खड़े होंगे। एक बड़ी बात यह है किः

हमारा परमेश्वर एक मज़ा किरकिरा करने वाला नहीं हैं।

आप यह जानेंगे जब आप यूहन्ना का सुसमाचार पढ़ेंगे।
परमेश्वर स्वर्ग में से

आसपास देखते हुए यह नहीं सोचता,
'ओह, वहाँ कुछ थोड़ी सी मौज मस्ती है। आओ उसे रोकें।

स्वर्गीय राडार पर खुशी और मस्ती दिखाई दे रही हैः
आओ उस पर रोक लगाएं।'

वह यह नहीं कह रहा। परमेश्वर चाहता है की हम जीवन का
आनंद लें जैसा की उसकी इच्छा है।

और अगर हम इस बारे में और अधिक जानना चाहते हैं
कि हम यहाँ क्यों हैं, हमें अब कैसे जीना चाहिए

और हम भविष्य के लिए कैसे तैयारी करें,
तो हमें केवल इतना करना होगा कि

यीशु के वचनों की ओर मुड़ना,
और उन्हें हम इस पुस्तक में पाएँगे।

अब, मेरा विचार है की आज रात मैंने बहुत कुछ
कह दिया है केवल आपकी भूख को जगाने के लिए, शायद,

आपके दिमाग में उन विचारों को डालने के लिए।
आइए हम अपने टेबल के आसपास कुछ

समय इकट्ठा हो कर, इन में से कुछ बातों के बारें
में आपस में विचार विनिमय करें,

और फिर हम कुछ ही समय में
दोबारा इकट्ठा होंगे।

© Lee McMunn, 2011

Identity – Who is God? Who are we?

© Lee McMunn, 2011

All rights reserved. Except as may be permitted by the Copyright Act, no part of this publication may be reproduced in any form or by any means without prior permission from the publisher.

Published by 10Publishing, a division of 10ofThose Limited.

All Hindi scripture quotations are taken from Hindi-O.V. © The Bible Society of India.

10Publishing, a division of 10ofthose.com
Unit 19 Common Bank Industrial Estate, Ackhurst Road, Chorley, PR7 1NH, England.
Email: info@10ofthose.com
Website: www.10ofthose.com